अध्याय 13

दूसरों के साथ हमारा सम्बन्ध

सोमवार की सुबह बाइबल स्कूल की प्रार्थना सभा में गवाही का समय दिया गया था। ओलगा नाम की एक लड़की ने खड़े होकर गवाही दी।

एक दिन पहले वह और उसकी सहेली स्थानीय गिरजाघर में काम करने को गई हुई थीं। जब वे कार्यरत थी कई पुरुष मदिरा के नशे में गिरजाघर में प्रवेश कर लड़ाई करने लगे। जैसे ही विश्वासी लोग दौड़ने लगे, उन पुरुषों में से एक ने अपने ही एक पुत्र पर जो नशे में था छुरे से वार कर दिया। जब ओलगा ने देखा कि वह जवान लड़का घायल हो गया, तब वह और उसकी सहेली ठहर कर उसकी सहायता करने लगे। उनका खुद का जीवन खतरे में था किन्तु उन्होंने एक शत्रु की जान बचाई। "आइए प्रार्थना करें" उसने कहा, "ताकि वह जवान लड़का जीवित रहे एवं मसीह को उद्धार कर्त्ता के रूप में ग्रहण करें।"

हमने प्रार्थना में सिर झुकाया, किन्तु मैं केवल लड़के के लिए ही प्रार्थना नहीं कर रहा था। मैं ओलगा एवं दूसरों के प्रति उसके प्रेम के लिए यहां तक कि जो उसका शत्रु था परमेश्वर को धन्यवाद भी दे रहा था।

ओलगा ने वह सीखा था जो हमने पाठ १२ में सीखा। दूसरों से प्रेम एवं उनकी सहायता करना परमेश्वर के प्रति अपना प्रेम प्रगट करने का एक तरीका है। आइये हम देखें कि परमेश्वर का वचन दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध के विषय में क्या कहता है।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे...

जो हमारे ऊपर नियुक्त हैं
जो हमारे चारों ओर रहते हैं
जो हमारे विरोध में है

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप ....

- दूसरों के साथ आपके सम्बन्ध के प्रति अपनी जिम्मेवारियों को स्वीकार कर सकें।
- प्रत्येक सम्बन्ध में प्रेम का प्रयोग कर सकें।

जो हमारे ऊपर नियुक्त हैं

उद्देश्य १. यह जानना कि एक विश्वासी को किसे आदर देना एवं उनकी आज्ञा मानना अवश्य है।

प्रत्येक के जीवन में कभी न कभी कोई अधिकारी रह चुका है। बच्चों के ऊपर माता-पिता एव माता-पिता के ऊपर धार्मिक एवं राजनैतिक अगुए होते हैं। यहां तक कि उन अगुओं के ऊपर कोई दूसरे अधिकारी होते हैं जो बताते हैं कि उन्हें क्या करना है। उन अधिकारियों के साथ जो हमारे ऊपर हैं, हमारे सम्बन्ध के प्रति बाइबल हमें क्या बताती है।

माता-पिता से प्रेम रखना, उनका आदर करना एवं आज्ञा मानना जरूरी है। आप इसे पाठ ११ में अध्ययन की गई आज्ञाओं में एक आज्ञा के रूप में याद रखेंगे। इफिसियों ६:१-२ भी बताता है "हे बालकों, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो क्योंकि यह उचित है। अपनी माता और पिता का आदर कर।"

पुलिस कर्मी, न्यायाधीश एवं राज्यपाल जैसे अधिकारियों का भी आज्ञा पालन करना जरूरी है। "हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के अधीन रहे। क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो। और जो अधिकार हैं वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं (रोमियों १३:१)।

विश्वासियों के रूप में हमारे अगुए पास्टर, कलीसियाई कार्यकारिणी सभा एवं सण्डे स्कूल शिक्षक हैं। इनका आदर करना एवं इनकी जिम्मेवारियो से सम्बन्धित बातों का आज्ञा पालन करना जरूरी है।

> अपने अगुवों की मानो और उनके अधीन रहो क्योंकि वे उनकी ना तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं। जिन्हें लेखा देना पड़ेगा कि वा यह काम आनन्द से करें न कि ठण्डी सांस लेकर, क्योंकि इस दश में तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं (इब्रानियों १३:१७)।

केवल परमेश्वर का अधिकार हमारे ऊपर नियुक्त अगुओं के अधिकारों से ऊंचा है। केवल तभी आज्ञाकारिता की मांग नहीं की जाती जब वे हमें वह काम करने को कहें जो परमेश्वर की आज्ञाओं या उसकी इच्छा के विरुद्ध हो। पतरस और दूसरे प्रेरितों पर भी यही बीता कि उन्हें प्रचार करने को मना किया गया था। पतरस को मालूम था कि परमेश्वर की आज्ञा सबसे बढ़कर मानना चाहिए। प्रेरितों के कार्य ५:२९ कहता है "पतरस और दूसरे प्रेरितों ने उत्तर दिया कि मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा पालन करना ही कर्तव्य कर्म है।"

• • •

जो आपको करना है

१. नीचे दिये गये पदों को पढ़ें। प्रत्येक के सामने इससे मेल खाने वाले वर्णन की संख्या लिखें।

...अ.	१. तीमुथियुस ५:१७	१)	माता पिता का आदर करना।
...ब.	कुलुस्सियों ३:२०	२)	असैनिक अधिकारियों का आदर करना।
...स.	१ पतरस २:१३	३)	कलीसियाई अधिकारियों का आदर करना।
...ड.	नीतिवचन ६:२०		
...इ.	मत्ती २२:१७-२१		

२. नीचे दी गई सूची को पढ़ें। इनमें से जितनों को आदर सत्कार देने में आपको कठिनाई होती है उनकी जगह पर × का चिन्ह डाल दें।

पिता ....

कलीसियाई कार्यकारिणी समिति ....

माता ....

पुलिस ....

पास्टर ....

यदि आपने दी गई जगहों में × का चिन्ह डाला हो तो प्रभु से आप प्रार्थना करें कि आपको उनका आदर सत्कार करने में कठिनाई क्यों होती है और उससे सहायता मांगे कि आगे से आप उनका आदर एवं उनकी आज्ञा का पालन कर सकें।

जो हमारे चारों ओर रहते हैं

उद्देश्य २. दूसरों से प्रेम रखने के लिए बाइबल के सिद्धांतों का उचित प्रयोग जानना।

एक दिन एक मित्र ने मुझसे कहा "यदि अविश्वासी लोग मुझसे बुरा व्यवहार करें तो भी मैं उनसे प्रेम रखूंगा किन्तु एक मसीही के द्वारा बुरा व्यवहार किये जाने को मैं सहन नहीं कर सकता। उन्हें अच्छी तरह मालूम है"।

यदि प्रभु यीशु भी ऐसा ही सोचता तो पतरस एवं अन्य प्रेरितों पर क्या बीतता? वे उसे अच्छी तरह जानते थे किन्तु जब उसे बन्दी बनाकर मुकदमा चलाने ले गए तो सब ने उसे छोड़ दिया। तो भी जब वह मृतकों में से जी उठा तो उन सब पर प्रगट होकर अपने प्रेम का आश्वासन उन्हें दिया।

हमने कई बार प्रभु को विफल किया है किन्तु वह निरन्तर हम से प्रेम करता है। प्रभु चाहता है कि हम दूसरों से वैसा ही प्रेम करें जैसा वह हमसे प्रेम करता है। "जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो" (यूहन्ना १३:३४)।

हमारे मित्रों एवं पड़ौसियों के प्रति हमारा व्यवहार वैसा ही होना चाहिये जैसा हम उन से चाहते हैं। लूका ६:३१ कहता है "जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।" रोमियों १३:९ में हमें मिलता है "अपने पड़ौसी से अपने समान प्रेम रख।"

अविश्वासी के साथ भी हमारा सम्बन्ध प्रेम का होना चाहिये। अपने कार्यों के द्वारा हम उन्हें यह बताएं कि मसीह हममें वास करता है।

रिचर्ड वुम्ब्रांड, एक मसीही पास्टर, जिनको अपने विश्वास के कारण जेल जाना पड़ा, वे एक-दूसरे की कहानी बताते हैं जो खुद भी एक पास्टर था। वह अपने मसीह समान चरित्र के लिए विख्यात था।

बाद में एक जवान कम्युनिस्ट को भी कैदी बनाकर उसे उसी कोठरी में रखा गया जहां ये पास्टर रखे गये थे। इन पास्टरों ने उसे गवाही देकर यीशु को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करने को कहा। किन्तु उस जवान ने ठुकरा दिया।

एक दिन यह जवान व्यक्ति वाद-विवाद कर रहा था, "मैं कैसे किसी को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण कर सकता हूं," उसने कहा "यदि मैंने उससे कभी मुलाकात न की और मालूम नहीं कि वह किसके समान है?"

"मैं तुम्हें बताऊंगा कि यीशु किसके समान है," पास्टर ने उत्तर दिया "वह मेरे समान है।"

बिना हिचकिचाहट के उस मनुष्य ने उत्तर दिया "यदि वह तुम्हारे समान है तो मैं उसे इसी समय अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार कर लूंगा।"

पास्टर की गवाही कितनी अद्भुत थी। मुझे भय इस बात का है कि बहुत ही थोड़े विश्वासी ऐसे हैं जो साहस के साथ कह सकते हैं "यीशु मेरे समान है।" किन्तु यहीं है जो प्रभु हमसे चाहता है — कि हम इतना अधिक उसकी तरह बन जाएं कि लोग उसे हममें देख सकें। मत्ती ५:१६ कहता है, "तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके ताकि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है बड़ाई करें।"

आइये हम प्रतिदिन प्रभु से कहें कि हम उसके समान बनते चले जाएं। तब, यह समय होगा कि हम अपने शब्दों को कार्य रूप दें एवं उसके समान बनना प्रारम्भ कर दें।

जो आपको करना है

३. नीचे दी गई संभावित परिस्थितियों पर विचार करें। जो हमने अभी अध्ययन किया है उस आधार पर कौन सी परिस्थितियां विश्वासियों के लिए सही एवं कौन सी गलत हैं? जो सही हैं उनके सामने "स" और जो गलत हैं उनके सामने "ग" लिख दें।

...अ. एक मसीही व्यक्ति आपके नाग की निन्दा करता है। आप उस पर मुकदमा चलाने की सोच रहे हैं।

...ब. आपका पड़ौसी कहता है, "अब कभी मसीह के बारे में मुझसे कहने मत आना।" किन्तु दूसरे ही दिन यदि उसे सहायता की जरूरत पड़े तो आप जाकर उसकी सहायता करते हैं।

...स. आपका पास्टर वह प्रचार करता है जो आप को पसन्द न हो और आप अपना असंतोष प्रगट करने के लिए चर्च से उठकर बाहर चले जाते हैं।

...ड. एक मसीही मित्र पाप से गिर जाता है और इस बात को कलीसिया के सामने रखने के बजाय आप चुपके से जाकर उसे पश्चात्ताप करने एवं परमेश्वर के साथ मेल करने में उसकी सहायता करते है

४. १ यूहन्ना ४:७-२१ पढ़ें। इन पदों के अनुसार नीचे दिए कौन-कौन से कथन सही हैं?

अ. हम प्रेम करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने पहले हमसे प्रेम किया।

ब. जो प्रेम नहीं करता वह परमेश्वर को नहीं जानता।

स. प्रेम में भय होता है ताकि प्रेम का तिरस्कार किया जा सके।

ड. परमेश्वर से प्रेम करना काफी है। एक भाई से प्रेम करना जरूरी नहीं यदि वह आपसे गलत व्यवहार करता है।

जो हमारे विरूद्ध हैं

उद्देश्य ३. अपने स्वयं के कार्यों की तुलना दूसरों से प्रेम रखने के बारे में बाइबल के सिद्धान्त से करना।

इस पाठ के प्रारम्भ में दी गई ओलगा की कहानी याद करें। क्या ओलगा ने उससे प्रेम किया जिसने गलत व्यवहार किया था? बजाय इसके कि उस घायल व्यक्ति के चंगाई के लिए प्रार्थना करती। ओलगा प्रार्थना कर सकती थी कि उनके बुरे कार्यों के लिए परमेश्वर उन्हें दण्ड दे।

क्या वह मसीह-का-सा स्वभाव होता? नहीं। उस रात जब यीशु पकड़वाया गया और पतरस ने महायाजक के एक दास का कान काट दिया

तो यीशु ने क्या किया? वह दास यीशु का शत्रु था किन्तु लूका हमें बताता है "परन्तु यीशु ने कहा अब बस करो : और उसका कान छूकर उसे अच्छा किया" (लूका २२:५१)।

हम यीशु के समान बनना चाहते हैं जिसने शत्रुओं से प्रेम किया एवं उन्हें क्षमा किया। मत्ती ५:४४ में उसने कहा "अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो" और फिर मत्ती ६:१५ में, "यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारा अपराध क्षमा नहीं करेगा।"

प्रेम सबसे बड़ा मसीही सद्गुण है। पहला कुरिन्थियों १३:१३ बताता है "विश्वास, आशा, प्रेम : यह तीनों स्थाई हैं और इनमें सबसे बड़ा प्रेम है।"

मसीहियों को सर्वप्रथम परमेश्वर से प्रेम रखना चाहिए। तदुपरांत वह अपना प्रेम हमारे हृदयों में डालेगा जिससे हम मित्र एवं शत्रु दोनों से प्रेम रख सकते हैं। "यीशु ने उत्तर दिया, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख" (मत्ती २२:३७)।

"और मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक-दूसरे से प्रेम रखो जैसे मैंने तुमसे प्रेम रखा है वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो" (यूहन्ना १३:३४)।

इस पद को मुखाग्र करे और बार-बार दुहराएं यह स्मरण करते हुए कि एक विश्वासी की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी परमेश्वर एवं मनुष्य के प्रति प्रेम है।

जो आपको करना है

५. नीचे दिए गए कथनों में से कौन-कौन से आपके जीवन में रहे हैं?

अ. जिस तरह आप अपने परिवार के साथ व्यवहार करते हैं वह प्रभाव डालता है कि जो आप परमेश्वर के विषय में बतायें उन्हें वे ग्रहण कर सकें।

ब. आपके कार्य आपके मित्रों में परमेश्वर की उस सामर्थ को प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न कर सकते हैं जिसने आपके जीवन को बदल डाला है।

स. आप प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं कि जब लोग आपको देखते हैं तो वे आप में यीशु को भी देख सकें।

ड. आप उन मित्रों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं जिन्हें दूसरों से.प्रेम ग्खने में कठिनाई हो रही है।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. अ. ३) कलीसियई अगुओं का आदर करना

ब. १) माता पिता का आदर करना

स. २) असैनिक अधिकारियों का आदर करना

ड. १) माता पिता का आदर करना

इ. २) असैनिक अधिकारियों का आदर करना

४.

अ. सही

ब. सही

स. गलत

ड. गलत

२. आपका उत्तर

आपका उत्तर। यदि कुछ कथन आपके लिए सही नहीं है तो पाठ को दुबारा पढ़ें। अपने कार्यों की जांच करें और परमेश्वर से सामर्थ्य की मांग करें जिससे आप दिन प्रतिदिन उसके आदर्शों के अनुकूल जीवन बिता सकें।